(अव्यक्त इशारे)
सफलतामूर्त बनो

1) किसी भी क्षेत्र में सफलतामूर्त बनने के लिए सहनशीलता का गुण धारण करो। जैसे कोई धैर्यता वाला मनुष्य सोच समझकर कार्य करता है तो उसे सफलता अवश्य प्राप्त होती है। वैसे ही सहनशील जो होते हैं वह अपनी सहनशीलता की शक्ति से कठोर संस्कार वाले को भी शीतल बनाकर उन्हें भी सहयोगी बना लेते हैं।

2) संगठन में सफल होने अथवा फाइनल पेपर में पास होने के लिए सहनशक्ति चाहिये क्योंकि अन्त समय में धन व साधन होते हुए भी कोई प्राप्ति नहीं हो सकेगी। ऐसी परीक्षाओं के समय पास होने के लिए सहन शक्ति चाहिए। कैसा भी विकराल समय हो लेकिन यदि आपके पास शक्तियों का स्टॉक जमा है, तो शक्तियाँ प्रकृति को दासी बना देंगी अर्थात् सब साधन स्वत: प्राप्त होते रहेंगे।

3) सेवा में निमित्त भाव ही सेवा की सफलता का आधार है। निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी - यह तीनों विशेषतायें निमित्त भाव से स्वत: ही आती हैं। निमित्त भाव नहीं तो अनेक प्रकार का मैं और मेरा-पन सेवा को ढीला कर देता है इसलिए न मैं, न मेरा। एक तरफ अति निर्मान, वर्ल्ड सर्वेन्ट; दूसरे तरफ ज्ञान की अथॉरिटी। जहाँ निमित्त भाव, निर्मान भाव और बेहद का भाव है, वहीं सफलता है।

4) वर्तमान समय की सेवा में सफलता का विशेष साधन है - वृत्ति से वायुमण्डल बनाना। आजकल की आत्माओं को अपनी मेहनत से आगे बढ़ना मुश्किल है इसलिए अपने वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल ऐसा पावरफुल बनाओ जो आत्मायें स्वत: आकर्षित होते आ जाएं। अभी सेवा में सकाश देकर सबकी बुद्धियों को परिवर्तन करने की सेवा करो तब सफलता आपके सामने स्वतः झुकेगी।

5) सेवा की सफलता का साधन निर्मानता है। निर्मान बन झुकना, यह कोई छोटा बनना नहीं है लेकिन सफलता के फल सम्पन्न बनना है। बुद्धि जो भी निर्णय करे वह श्रीमत के अनुकूल हो, श्रीमत के सिवाए और कोई बात बुद्धि में न आये। बुद्धि में सदा बाबा की स्मृति हो तो आटोमेटिकली जजमेन्ट सत्य और सफलता वाली होगी।

6) सेवा में रहते कहाँ न्यारा बनना होता है और कहाँ प्यारा, इसके ऊपर विशेष अटेन्शन दो। अगर प्यार से सेवा न करो तो भी ठीक नहीं और प्यार में फँसकर सेवा करो तो भी ठीक नहीं। तो प्यार से सेवा करो लेकिन न्यारी स्थिति में स्थित होकर करो तब सफलता होगी। अगर मेहनत के हिसाब से सफलता कम मिलती है तो जरूर प्यारे और न्यारे बनने के बैलेन्स में कमी है।

7) सेवाधारियों को सदा सफलता स्वरूप रहने के लिए बाप समान बनना है। एक ही शब्द याद रहे - फालो फादर। जो भी कर्म करते हो - चेक करो कि यह बाप का कार्य है। अगर बाप का है तो मेरा भी है, बाप का नहीं तो मेरा भी नहीं। यह चेकिंग की कसौटी सदा साथ रहे तो जैसे बाप सदा सफलता स्वरूप है, वैसे स्वयं भी सदा सफलता स्वरूप हो जायेंगे।

8) सेवा की सफलता का आधार - त्याग और तपस्या है। एक बाप दूसरा न कोई - यह है हर समय की तपस्या और जैसा समय, जैसी समस्यायें, जैसे व्यक्ति वैसे स्वयं को मोल्ड कर स्व कल्याण और औरों का कल्याण करने के लिए सदा इज़ी रहना, परिस्थिति और समय अनुसार अपनी श्रेष्ठ स्थिति बना लेना अर्थात् अपने को मोल्ड कर लेना इसको कहा जाता है त्याग। इसी त्याग, तपस्या से सफलता मिलती है।

9) कोई भी कार्य करते डबल लाइट फरिश्ता वा ट्रस्टी होकर रहो तो सफलता मिलती रहेगी। साफ दिल मुराद हांसिल। कराने वाला करा रहा है, अगर मैं कर रहा हूँ तो आत्मा की शक्ति प्रमाण सेवा का फल मिलता है। बाप करा रहा है तो बाप सर्वशक्तिवान है। एक श्रेष्ठ संकल्प वा कर्म का हजार गुणा फल बाप द्वारा प्राप्त हो जाता है।

10) सर्व ब्राह्मणों का एक संकल्प, यही कार्य की सफलता का आधार है। किसी भी कार्य में सबका सहयोग चाहिए। किले की एक ईट भी कमजोर होती है तो किले को हिला सकती है इसलिए छोटे बड़े सब इस ब्राह्मण परिवार के किले की ईट हो, तो सभी को एक ही संकल्प द्वारा कार्य को सफल करना है। सबके मन से यह आवाज निकले कि यह मेरी जिम्मेवारी है तब सफलता मिलेगी।

11) कितनी भी रूकावटें आएं लेकिन एक बल एक भरोसे के आधार पर सफलता मिलती रही है और मिलती रहेगी। जहाँ सर्वशक्तिवान बाप साथ है वहाँ यह छोटी-छोटी बातें ऐसे समाप्त हो जाती हैं जैसे कुछ भी थी ही नहीं। असम्भव भी सम्भव हो जाता है क्योंकि सर्वशक्तिवान के बच्चे बन गए। 'मक्खन से बाल' समान सब बातें सिद्ध हो जाती हैं।

12) मन्सा में शुभ भावना, वाणी में बाप से सम्बन्ध जुड़ाने वाले शुभ कामना के श्रेष्ठ बोल और सम्बन्ध सम्पर्क में आने से स्नेह और शान्ति के स्वरूप से आकर्षित करो। इसके लिए स्मृति, वाणी और कर्म में श्रेष्ठता को धारण कर प्लेन बुद्धि बनो। कोई भी पुराने संस्कार का दाग न हो तब प्लैन और प्रैक्टिकल एक हो जायेंगे फिर सफलता एरोप्लेन मुआफिक उड़ेगी।

13) जहाँ युनिटी है वहाँ सहज सफलता है लेकिन किसी को गिराने में युनिटी नहीं करना, सदा उड़ती कला में जाना है और सबको ले जाना है, यही लक्ष्य रहे। सदा आज्ञाकारी, वफादार बन हर कदम में फालो फादर करो। जो बाप के गुण वह बच्चों के, जो बाप का कर्तव्य वह बच्चों का, जो बाप के संस्कार वह बच्चों के... यही सफलता मूर्त बनने का आधार है।

14) अपने को निमित्त समझकर चलो तो सदा हल्के और सफलतामूर्त रहेंगे। कभी सेवा कम होती, कभी ज्यादा तो बोझ न लगे। क्या होगा, कैसे होगा। कराने वाला करा रहा है और मैं सिर्फ निमित्त बन कार्य कर रहा हूँ, सेवाधारी अर्थात् निर्मान बन निर्माण करने वाले। अगर निर्मान नहीं, मान की इच्छा है तो बोझ है, बोझ वाला कभी तीव्र नहीं जा सकता इसलिए सदा हल्के रह सफलतामूर्त बनो।

15) जैसे आजकल के जमाने में पैर के नीचे पहिये लगाकर दौड़ते हैं, वह कितने हल्के होते हैं। उनकी रफ्तार तेज हो जाती है। तो जब बाप चला रहा है, तो श्रीमत के पहिये लगने से स्वतः ही पुरूषार्थ की रफ्तार तेज हो जायेगी और सफलता मिलती रहेगी। सेवा में कोई भी कदम

उठाते हो तो तीन बातें सदा स्मृति में रखो: 1- एकनामी (एक का ही नाम बाला हो) 2- एकमत और 3- इकॉनामी।

16) सफलता के लिए अपने पास एक रूहानी तावीज़ रखो - "रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है"। यह रिगार्ड का रिकार्ड सफलता का अविनाशी रिकार्ड हो जायेगा। सदा मुख पर एक ही सफलता का मन्त्र हो - "पहले आप'। यथार्थ रूप से पहले मैं को मिटाकर दूसरे को आगे बढ़ाना सो अपना बढ़ना समझ चलने से सफलता को पाते रहेंगे।

17) सदा हम एक हैं - यही नारा सफलता का साधन है। 'एकता और एकाग्रता" यह किसी भी कार्य में सफलता की श्रेष्ठ भुजायें हैं। एकाग्रता अर्थात् सदा निरव्यर्थ संकल्प, निर्विकल्प। जहाँ एकता और एकाग्रता है वहाँ सफलता गले का हार है। जो निरव्यर्थ और निर्विकल्प स्थिति में रहते हैं उनसे ब्राह्मण सो फरिश्ता स्वरूप का साक्षात्कार होता है।

18) सफलता का सितारा तब बनेंगे जब स्व की सफलता का अभिमान न हो, वर्णन भी न करे। अपने गीत नहीं गाये, लेकिन जितनी सफलता उतना नम्रचित, निर्माण, निर्मल स्वभाव। दूसरे उसके गीत गायें लेकिन वह स्वयं सदा बाप के गुण गाये। ऐसी निर्मानता, निर्माण का कार्य सहज करती है। जब तक निर्मान नहीं बने तब तक निर्माण नहीं कर सकते।

19) सबके मन की शुभ भावना और शुभ कामना का सहयोग किसी भी कार्य में सफलता दिला देता है यही शुभ भावना, शुभ कामना का किला आत्माओं को परिवर्तन कर लेता है। वायुमण्डल का किला सर्व के सहयोग से ही बनता है। ईश्वरीय स्नेह का सूत्र एक हो तो अनेकता के विचार होते हुए भी सहयोगी बनने का विचार उत्पन्न हो जाता है। |

20) जितना अभी तन, मन, धन और समय लगाते हो, उससे मन्सा शक्तियों द्वारा सेवा करने से बहुत थोड़े समय में सफलता ज्यादा मिलेगी। अभी जो अपने प्रति कभी - कभी मेहनत करनी पड़ती है - अपनी नेचर को परिवर्तन करने की वा संगठन में चलने की वा सेवा में सफलता कभी कम देख दिलशिकस्त होने की, यह सब समाप्त हो जायेगी।

21) कम्बाइण्ड सेवा के बिना सफलता असम्भव है। ऐसा नहीं कि जाओ सेवा करने और लौटो तो कहो माया आ गई, मूड ऑफ हो गया, डिस्टर्ब हो गये इसलिए अन्डरलाइन करो - सेवा में सफलता या सेवा में वृद्धि का साधन है स्व और सर्व की कम्बाइण्ड सेवा। ध्यान रहे कोई भी सेवा हमारी स्थिति को डगमग न कर दे।

22) जिसके साथ स्वयं सर्वशक्तिमान् बाप कम्बाइण्ड है, सर्व शक्तियां स्वत: उनके साथ होंगी। जहाँ सर्व शक्तियां हैं वहाँ सफलता न हो, यह असम्भव है। कोई अच्छा साथी लौकिक में भी मिल जाता है तो उसको छोड़ नहीं सकते। ये तो अविनाशी साथी है। कभी धोखा देने वाला साथी नहीं है। सदा ही साथ निभाने वाला साथी है। तो साथी को सदा साथ में रख सफलतामूर्त बनो।

23) आप मास्टर रचता, सम्पन्न, सम्पूर्ण बनो तो प्रकृति आपका स्वागत करे। वह सफलता की मालायें लेकर स्वागत करने के लिए इन्तजार कर रही है। इसके लिए सिर्फ यह स्मृति रहे कि विजय तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। स्वप्न में भी कभी यह संकल्प न आये कि

नामालूम विजय होगी या नहीं! मास्टर नॉलेजफुल के मुख से नामालूम शब्द कभी नहीं निकलना चाहिए।

24) जब अपने कर्मों और संकल्पों का खाता क्लीयर रखेंगे तब सम्पूर्ण वा सफलतामूर्त बन सकेंगे। अगर अपना ही हिसाब चुक्तू नहीं कर सकते तो दूसरों के कर्मबन्धन वा दूसरों के हिसाब- किताब को कैसे चुक्तू करा सकेंगे इसलिए सारे दिन में जो हुआ उसे नॉलेज की शक्ति और याद की शक्ति, विल पावर और कन्ट्रोलिंग पावर से मिटाकर अपने रजिस्टर को रोज़ साफ रखना चाहिए।

25) अपनी स्थिति की हलचल, स्पष्ट को भी अस्पष्ट बना देती है। उलझनों के कारण उज्जवल नहीं बन सकते हो इसलिए अपनी स्थिति की हलचल न हो तब स्मृति क्लीयर होगी। जितना अपने ऊपर केयर रखेंगे उतना क्लीयर होते जायेंगे और उतना ही अपने पुरुषार्थ में वा सर्विस में सफलता स्पष्ट और समीप दिखाई देगी।

26) विश्व कल्याण की सेवा के क्षेत्र में सहज सफलता का साधन प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा बाप की प्रत्यक्षता है। जो बोलो वह देखें। बोलते हो कि हम ब्राह्मण आलमाइटी अथॉरिटी हैं, मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, मायाजीत हैं, रहमदिल हैं, रूहानी सेवाधारी हैं... तो जो बोलते हो वह प्रैक्टिकल स्वरूप में दिखाई दे। मधुरता की मधु सदा साथ रहे तो हर कर्म में सफलता है ही।

27) साक्षीपन की राखी सदैव बंधी हुई हो तो सर्विस की सफलता बहुत जल्दी निकलेगी। अभी जिस कर्तव्य में मास लगता है, कर्तव्य में एक घंटा भी नहीं लगेगा। तो जैसे औरों को प्युरिटी की राखी बांधते हो, ऐसे स्वयं को साक्षीपन की राखी बांध लो, जितना साक्षी रहेंगे उतना साक्षात्कारमूर्त और साक्षात मूर्त बनेंगे।

28) जैसे शुरू में बापदादा का साक्षात्कार घर बैठे हुआ ना। वैसे अब दूर बैठे आपकी पावरफुल वृत्ति ऐसा कार्य करेगी जैसे कोई हाथ से पकड़ कर लाया जाता है। अभी अपनी वृत्ति से शुद्ध वायुमण्डल फैलाते रहो। हर सेकेण्ड अपने पर अटेन्शन रख निर-व्यर्थ संकल्प, निर्विघ्न, आकर्षण मूर्त बनो तो कैसा भी नास्तिक तमोगुणी बदला हुआ देखने में आयेगा। लेकिन यह सर्विस सफलता को तब पायेगी जब वृत्ति और बातों से क्लीयर होगी।

29) सेवा में वा स्वंय की चढ़ती कला में सफलता का मुख्य आधार है – एक बाप से अटूट प्यार। बाप के सिवाए और कुछ दिखाई न दे। संकल्प में भी बाबा, बोल में भी बाबा, कर्म में भी बाप का साथ, ऐसी लवलीन स्थिति में रह एक शब्द भी बोलेंगे तो वह स्नेह के बोल दूसरी आत्मा को भी स्नेह में बाँध देंगे। ऐसी लवलीन आत्मा का एक बाबा शब्द ही जादू मंत्र का काम करेगा।

30) सेवा में सफलता का मुख्य साधन त्याग और तपस्या है। त्यागी और तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लग्न में लवलीन, प्रेम के सागर में समाए हुए, ज्ञान, आनन्द, सुख, शान्ति के सागर में समाये हुए को ही कहेंगे-तपस्वी। ऐसे त्यागी, तपस्वी बच्चे सदा अपना समय, संकल्प, सम्बन्ध सम्पर्क सब सफल करते सफलतामूर्त बनते हैं।